अखिल भारतीय अंतर विभागीय/ अंतर मंत्रालय हिंदी संगोष्ठी, शिलॉग

भारत में मौसम व कृषि के मध्य किसान की भूमिका

प्रस्तुत कर्ता

कर्मवीर सिंह

प्रशासनिक अधिकारी

भारत मौसम विज्ञान विभाग

लोदी रोड़, नई दिल्ली-11003

आप सब जानते हैं कि देश के लिए कृषि सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यहाँ की दो तिहाई से ज्यादा जनसंख्या कृषि से ही जुड़ी हूई है। उपयुक्त मौसम के बिना किसान की कड़ी मेहनत व्यर्थ जा सकती है तथा किसान के बिना अकेला अनुकूल मौसम भी कुछ नहीं कर सकता इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ज्यादा कृषि उत्पादन के लिए उपयुक्त मौसम तथा किसान की मेहनत दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। अधिक कृषि उत्पादन से ही देश की सकल घरेलु उत्पाद (जी डी पी) दर में वृद्धि संभव है इसलिए अब हम उपयुक्त मौसम, किसान की भूमिका तथा सरकार के सहयोग के बारे में विस्तुत अध्ययन करेंगे।

उपयुक्त मौसम का किसान से संबंध

- मौसम का कृषि पर सीधा प्रभाव पड़ने के कारण किसान के साथ घनिष्ठ संबंध होता है । अगर मौसम उपयुक्त होगा तो यह संबंध लाभदायक होता है तथा मौसम खराब होने पर इस संबंध का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । हम और आप के बीच बने हुए संबंधों को दोनों तरफ से आपसी अच्छे व्यवहार के कारण मजबूत रखा जा सकता है । लेकिन यहां पर किसान के साथ मौसम कैसा भी बर्ताव करे फिर भी मौसम के साथ संबंध बनाए रखना किसान की मजबूरी है । प्रकृति से हमें बहुत कुछ मिलता है । इसलिए हमें प्रकृति के साथ संबंध बनाए रखने को मजबूर है ।

मौसम पूर्वानुमान का कार्य

यह कार्य भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा संपन्न किया जाता है । पिछले काफी वर्षो से इस विभाग द्वारा अपनी कार्यशैली में सुधार करते हुए आधुनिक मशीनों का प्रयोग करके सटीक मौसम पूर्वानुमानों का उत्पादन किया जा रहा है । सुपर-कम्पयूटर, रडार, स्वचालित मौसम स्टेशन एवं स्वचालित वर्षामापी आदि यंत्रों की सहायता से एकदम सही मौसम संबंधी जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है ।

किसानों को मौसम पूर्वानुमानों संबंधी जानकारी

- यह भी हम सब भली-भांति जानते हैं कि टी.वी, रेडियो व मोबाईल के माध्यम से लाखों किसानों को मौसम पूर्वानुमानों संबंधी जानकारी समय पर उपलब्ध कराई जा रही है ।

1. अगर मौसम व किसान के बीच घनिष्ठ संबंध भी है
2. मौसम विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा सटीक मौसम पूर्वानुमान भी तैयार किए जा रहे हैं
3. उपर्युक्त पूर्वानुमान लाखों किसानों तक अलग-2 माध्यमों से समय पर उपलब्ध भी कराये जा रहे हैं।

अब यह प्रश्न उठता है कि हमारे किसान कृषि से अच्छी आय क्यों नहीं प्राप्त कर पा रहें हैं और इसी प्रश्न का कारण जानना एवं हल ढूँढना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है ।

मुख्य कारण – साक्षरता

1. जनसंख्या वृद्धि ।
2. जोतों का आकार छोटा होना ।
3. रहन-सहन का निम्न स्तर ।
4. सरकारी नीतियों संबंधी अज्ञानता ।
5. खाद, बीज व दवाइयों के प्रयोग में कठिनाई ।
6. आपसी समन्वय की कमी ।
7. फसल बीमा योजना का सम्पूर्ण ज्ञान न होना ।
8. फसल का उचित मूल्य न मिल पाना ।
9. घर का खर्च बजट बनाकर न कर पाना ।
10. ईर्ष्यापूर्ण प्रतिस्पर्धा ।
11. भ्रष्टाचार का शिकार होना ।

अन्य कारण

1. समय पर लेबर न मिल पाना ।
2. नहर का पानी जरूरत के समय न मिल पाना
3. जंगली जानवरों द्वारा फसल का नुकसान करना ।
4. सही आंकड़े सरकार तक न पहुँच पाना ।
5. योजना निर्माण तथा उसके क्रियान्वन के बीच शक्ति व गति में कमी ।
6. आर्थिक तंगी के कारण संशाधनों की कमी ।

किसान द्वारा किए जाने वाले उपाय

1. आयु की परवाह किए बिना शिक्षा ग्रहण करना ।
2. अपने परिवारों को नियोजित रखना ।
3. मोबाईल, टी.वी, रेडियो एवं समाचार-पत्रों का प्रयोग करना ।
4. आपसी सद्भाव व समन्वय बनाए रखना ।
5. सकारात्मक प्रतिस्पर्धा करना ।
6. सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूक रहना तथा उनसे लाभ उठाना
7. भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाना ।
8. फसल बीमा योजना की सम्पूर्ण जानकारी लेकर उसका लाभ उठाना
9. अपना रहन-सहन का स्तर ऊँचा उठाना ।
10. बच्चों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देना ।
11. बच्चों को स्वयं रोजगार या नौकरी के लिए प्रेरित करना
12. अपने घर का बजट बनाकर उसके अनुरूप कार्य करना ।

सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय

1. किसानों के शिक्षित करने के लिए हर संभव प्रयास करना ।
2. परिवारों को नियोजित रखने के लिए तरह-तरह के प्रलोभन देना ।
3. गरीब किसानों के बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा व चिकित्सा प्रदान करना ।
4. किसानों के रहन सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के उपाय करना ।
5. ग्राम पंचायतों के माध्यम से किसानों तक सरकार की सीधी पहुँच सुनिश्चित करना ।
6. पंच-सरपंचों का चुनाव लड़ने वालों के लिए शैक्षणिक योग्यता का प्रावधान करना ।
7. अनभिज्ञ किसानों को उनसे संबंधित सभी जानकारी उपल्ब्ध कराना ।
8. छोटे किसानों को अतिरिक्त संसाधन उपलब्ध कराना ।
9. भ्राष्टाचार पर रोकथाम के उपाय करना ।
10. बीस-बीस या तीस-तीस किसानों का समूह बनाकर उनको कार्यक्रम प्रदान करना ।
11. फसलों का उचित मूल्य दिलवाना सूनिश्चित करना ।
12. किसानों को अपने घर का बजट बनाने संबंधी प्रशिक्षण देना ।

निष्कर्ष

अंत में हम कह सकते हैं कि भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा उत्पादित बहुमूल्य पूर्वानुमानों को गाँव-गाँव के प्रत्येक किसान को सही समय पर उपलब्ध कराने के लिए केंद्र/राज्य सरकारों द्वारा ठोस कदम उठाए जाने चाहिएं जिससे मौसम विभाग की मेहनत भी सफल हो जाए, हमारे किसान भी समृद्ध हो जाएं, हमारा देश भी खुशहाल हो जाए तथा विश्व में हमारा नाम और अधिक ऊँचा उठ जाए।

समाप्त